# एसआईएस फैकल्टी वॉल ऑफ ऑनर

यह फैकल्टी वॉल ऑफ ऑनर की संकल्पना, रुपरेखा, निर्माण और अर्पण प्रो. भरत एच. देसाई द्वारा किया गया जो कि जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) के अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान (SIS; एसआईएस) में अंतर्राष्ट्रीय कानूनी अध्ययन केन्द्र के अध्यक्ष हैं। यह पहल 19 अप्रैल और 25 अगस्त 2023 को उन्नत अध्ययन एवं अनुसंधान समिति (CASR) के अधिदेश के तहत हुई। समिति ने "प्रोफेसर भरत एच. देसाई को इस मामले में अग्रणी भूमिका निभाने और वॉल ऑफ ऑनर के भौतिक स्वरूप की स्थापना के लिए प्राधिकृत किया"। एसआईएस बोर्ड ऑफ स्टडीज ने 22 दिसंबर 2023 को इस तथ्य की पुष्टि और गहरी प्रशंसा की।

एसआईएस फैकल्टी वॉल ऑफ ऑनर का प्राथमिक उद्देश्य यह है कि सामूहिक रूप से एसआईएस को पिछले सभी संकाय सदस्यों का स्मरण करना जिनके योगदान ने एसआईएस को मूर्त रूप दिया है। यह फैकल्टी वॉल ऑफ ऑनर, वास्तव में, इंगित करता है कि आज के सभी संकाय सदस्य उन पूर्वजो के कंधों पर खड़े हैं जिन्होंने एसआईएस की नींव रखी तथा अपनी क्षमताओं के अनुसार जमीनी कार्य किया। इन पूर्व एसआईएस संकाय सदस्यों को सम्मानित करके स्कूल स्वयं को सम्मानित कर रहा है। भारत में अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन के अग्रणी के रूप में हमें दृढ़ छात्रवृत्ति, सुसंगत परंपराओं और संवेदनशीलता के साथ एसआईएस की विरासत को जारी रखने की आवश्यकता है" (देसाई प्रस्ताव CASR, 19 अप्रैल 2023)।

वॉल ऑफ ऑनर में उन सभी संकाय सदस्यों के चित्र (वरिष्ठता के वर्ष के अनुसार), जेएनयू में सेवा के वर्षो तथा सदस्यों के विशेषज्ञता के क्षेत्र शामिल हैं, जिन्होंने भारतीय अंतराष्ट्रीय अध्ययन संस्थान (ISIS; आईएसआईएस) की संरचना की तथा उसके उतराधिकारी एसआईएस को अंतराष्ट्रीय अध्ययन के क्षेत्र में एक प्रवर्तनशील संस्थान के रूप में स्थापित किया। यह आईएसआईएस से एसआईएस की यात्रा को दर्शाता है। आईएसआईएस की स्थापना 1951 में भारत में स्नातकोत्तर अनुसंधान तथा अंतरराष्ट्रीय मामलों के उद्देश्यपूर्ण अध्ययन के लिए गई थी। इस विचार को पंडित हृदयनाथ कुंजरू, ए. अप्पादोराई और अन्य सदस्यों के सुझाव के आधार पर विश्व मामलों की भारतीय परिषद (ICWA) ने मूर्त रूप दिया। बाद में आईएसआईएस को एक सोसायटी के रूप में पंजीकृत किया गया और 03 अक्टूबर 1955 में भारत के उपराष्ट्रपति एस. राधाकृष्णन ने इसका उद्घाटन किया। मार्च 1955 में, दिल्ली विश्वविद्यालय ने पीएचडी (PhD) की डिग्री प्राप्त करने के लिए छात्रों को तैयार करने के उद्देश्य से स्कूल (ISIS) को विश्वविद्यालय के विशेषाधिकारों में प्रवेश दिया और सितंबर 1961 में, केंद्र सरकार ने यूजीसी अधिनियम 1956 के तहत आईएसआईएस को डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी का दर्जा दिया। अंततः 1970 में आईएसआईएस का जेएनयू में विलय हो गया। ए. अप्पादोराई ने आईएसआईएस के संस्थापक निदेशक (1955–65) के रूप में कार्य किया। उनके बाद एम.एस. राजन दूसरे निदेशक (1966–71) हुए, जिन्होंने जेएनयू के साथ आईएसआईएस के विलय की प्रक्रिया को मूर्त रूप दिया। इस तरह आईएसआईएस का नाम बदलकर एसआईएस कर दिया गया।

1955 के बाद से अपनी दीर्घ कालीन यात्रा के दौरान स्कूल को अपने आधारस्थान सप्रू हाउस (1955–1968) से, 35 फिरोजशाह रोड (1968–1970) में, इसके पश्चात जेएनयू ओल्ड कैंप्स (1970–1989) और, अंततः, जेएनयू न्यू कैंप्स (1989) अपने वर्तमान स्थान में स्थापित किया गया। वॉल ऑफ ऑनर कि स्थापना एसआईएस को दृश्य बनाने हेतु पांच साल चली लंबी पहल (Making SIS Visible; 2008–2013) के नकशेकदम पर है। वॉल ऑफ ऑनर का उद्देश्य एसआईएस परिवार को 68 वर्षों (1955–2023) की अवधि में उत्कृष्ट और प्रतिष्ठित विद्वानों की आकाशगंगा के द्वारा किए गए मूलभूत उद्देश्यों, अद्वितीय वंशावली और विद्वानाध्यायिकी योगदानों के प्रति संवेदनशील बनाना है, ताकि स्कूल (SIS) एक उज्ज्वल भविष्य में प्रवेश कर सके। एसआईएस ने अनूठी भारतीय ज्ञान परंपरा को संजोकर रखा है तथा भारत और दुनिया को प्रभावित करने वाले वैश्विक मुद्दों को संबोधित करने वाले 'थिंक टैंक' (think tank) के रूप में अपनी भूमिका को प्रमाणित करने का लक्ष्य रखता है।

वॉल ऑफ ऑनर का उद्देश्य एसआईएस के घरेलू मोर्चे पर संस्कृत कहावत <u>विद्वान सर्वत्र पूज्यते</u> (विद्वानों की हर जगह पूजा की जाती है) के सार और भावना को मूर्त रूप देने का प्रयास करता है और साथ ही जेएनयू के नये (2023) आदर्श वाक्य <u>तमसो मा ज्योतिर्गमय</u> (अंधकार से प्रकाश की ओर) को प्रभावी बनाता है। यह एसआईएस वॉल ऑफ ऑनर पिछली पीढ़ी के संकाय सदस्यों के योगदान और विरासत को श्रद्धापूर्वक नमन और अंजलि देता है। उनकी भावना, ऊर्जा, विरासत का आह्वान और प्रेरणादायक रूप में पुनर्जीवित करके, एसआईएस फैकल्टी वॉल ऑफ ऑनर अंतरराष्ट्रीय मामलों की समकालीन चुनौतियों से निपटने में भारतीय ज्ञान परंपरा को प्रज्वलित करके रखने का संकल्प करता है।

➢ *यह फैकल्टी वॉल ऑफ ऑनर का अनावरण 27 दिसंबर 2023 के दिन एसआईएस की पूर्व छात्रा तथा जेएनयू की वर्तमान कुलपति शांतिश्री डी. पंडित के द्वारा डीन श्रीकांत कोंडापल्ली तथा सभी संकाय सदस्यों, कर्मचारियों एवं छात्रों की उपस्थिति में किया गया।*